International Journal of Humanities and Social Science Invention
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org Volume 2 Issue 8 ǁ August. 2013ǁ PP.61-63

मोलेला की पारम्परिक कला से प्रेरित कलाकार

डॉ. गगन बिहारी दाधीच
प्राध्यापक–चित्रकला
एस. एम. बी. राजकीय महाविद्यालय
नाथद्वारा (राजस्थान)

आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की कलाओं का विवेचण करें तो यह स्पष्ट होता है कि सभी कलाएँ अपने देशज् तत्वों से उत्प्रेरित रही हैं। प्राचीन कला रूपों के साथ ही देश के कलाकारों के प्रेरणा स्त्रोत अजन्ता के गुफा चित्र एवं खजुराहों का शिल्पांकन तो है ही, राजस्थान की पारम्परिक लघु चित्र शैली एवं लोक व आदिवासी कलाएं भी कई सृजनकारों का प्रेरणा स्थल रहा हैं। देश विदेश के कई ऐसे कलाकार है। जिन्होने पारम्परिक व लोक – आदिवासी कला संस्कृति के साथ ही पारम्परिक चित्र शैलियों की रंगात्मकता व संयोजन निरूपण से प्रेरित होकर अपनी मौलिक कला भाषा की निर्मिति की। [1.]

राजस्थान के राजसमन्द जिले में बसा कुंभकारो का एक गांव है ''मोलेला'' जहॉ की पारम्परिक मृण कला रूपों से देश विदेश के कई कलाकार उत्प्रेरित रहे हैं। यहां की मृण कला की विशिष्टता इस रूप में है कि यहां का कुँभकार समाज आदिवासी समाज के लिए लोक देवी देवताओं की प्रतिमाएँ बनाकर पीढयों से चली आ रही परम्परा का निवार्ह कर रहा हैं। तकनीक रूप में देखे में देखे तो कुंभकार समाज माटी से 15 गुना 18 इंच आकार की प्लेट का निर्माण करते है। तथा उस पर आदिवासी समाज में पूजित लोक देवी देवताओ का रूपांकन करते है। [2.] इन प्रतिमाओं में धर्मराज, कालाजी गोराजी, नारवाली देवी, पाडावाली देवी, साढू माता के व गणेश कृतियां प्रमुख हैं। [3.] मिटटी को गूंथ कर प्लेट बनाने व उस पर देवताओं का रूपांकन करने के बाद उसे सूखने के लिए रख दिया जाता है। 30 – 40 प्रतिमाएं एकत्रित होने के बाद कुंभकार पारम्परिक तरीकों से अवाड़ा (भट्टी) बना कर उसे लकड़ी से जलाते है और प्रतिमाओं को पकाते हैं। [4.] पकाने के बाद इन पर सफेदी का लेपन किया जाता है। इसके बाद गोंद मिश्रित पारम्परिक खनिज रगों से माटी की प्रतिमाओं कों सुसजित किया जाता है।

लोक देवी देवताओं की पकी हुई माटी के धरातल को सफेद करने के बाद गोंद मिश्रित पारम्परिक रंगों से इन प्रतिमाओं को सुसज्जित किया जाता है। लोक देवी–देवताओं की इन प्रतिमाओं को कुम्भकार व आदिवासी समाज के भोपा (पुजारी) अपने अपने गांव के लोगों के साथ कुम्भकारों के घर पहुँचते है और अपने आराध्य लोक देवताओं की प्रतिमाओं का चयन करते हैं।[5] इसके बाद परम्परानुरूप माघ माह के शुभ दिवसों पर इन्हें पूर्ण मनोभाव से देवरों में स्थापित करते हैं। उल्लेखनीय हैं कि मोलेला के कुम्भकार लगभग 7–8 पीढ़ियों से लोक देवी–देवताओं की प्रतिमाओं की रचना कर परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं।

शोध समीक्षा के इस क्रम में देश विदेश के उन कलाकारों का जिक्र करें जो मुख्यतः मोलेला की पारम्परिक कला से प्रेरित रहे हैं। शांति निकेतन से निष्नात उदयपुर प्रवासी प्रो. सुरेश शर्मा ऐसे रचनाकार रहे हैं, जिन्होंने माटी में निहित रचनात्मक संभावनाओं को अपनी कला में अभिव्यक्त किया। अपने गुरु राम किंकर बैज से मृणशिल्प की बारीकियों को सीखा और अपनी कला यात्रा के कई पड़ावों पर माटी रचित शिल्पों को प्रदर्शित किया। टखमण–28 कला संस्था के प्रणेता प्रो. शर्मा उदयपुर स्थित सुखाडिया विश्व विद्यालय के ललित कला विभाग में प्राध्यापक रहे। इनकी प्रेरणा व प्रयासों से ही राजस्थान में पहली बार सन् 1981 में कुम्भकारों के गांव मोलेला में राष्ट्रीय स्तर की मृणकला कार्यशाला का आयोजन हुआ।[6] एक सप्ताह के इस कला आयोजन में देश के कई वरिष्ठ युवा कलाकारों ने पारम्परिक कुम्भकारों के साथ माटी में अपने मनोभावों को मुखरित किया।

विषय के इस क्रम में पेरिस स्थित नामी कला महाविद्यालय ''एकोल द बोजां'' में प्राध्यापक रहे प्रो. विन्सेंट बैरी का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा। प्रो. बैरी गत 3 दशक से नियमित भारत आते रहे है और लोक जनजीवन के साथ ही आदिवासी कलाओं के प्रति इनका विषेश रुझान रहा है। इनके कलारुपों में भारतीय लोग संस्कृति से प्रेरित सरलीकृत बिम्ब रूपों का जमाव दिखाई देता है।[7] मोलेला में 2 दशक से सृजनरत गगन दाधीच ने 2001 में मुंबई में अपने

मृणशिल्पों की प्रदर्शनी का आयोजन किया। प्रदर्शनी के दौरान ही प्रो.विन्सेंट से संवाद हुआ। उन्होंने कलाकार दाधीच से मोलेला की परम्परा, माटी की तासीर, लकड़ी से अवाड़ा पकाने की पारम्परिक तकनीक की जानकारी प्राप्त की।

इसके बाद 2002 में प्रो. विन्सेंट फ्रांस सरकार की रेजिड़ेंसी स्कॉलरशिप के तहत 3 माह के लिए मोलेला प्रवास किया तथा स्टुडियो 25 टेराकोटा के संस्थापक कलाकार गगन दाधीच को फ्रांस के लबॉन में 4 माह तक शिल्प कर्म करने का अवसर मिला। मोलेला प्रवास के दौरान प्रो. विन्सेंट एवं गगन दाधीच ने 20 से ज्यादा मृणशिल्पों की रचना की। जिसकी संयुक्त कला प्रदर्शनी ''जुगलबन्दी'' नाम से उदयपुर, जयपुर, भोपाल एवं अहमदाबाद में आयोजित हुई।

देशभर में चर्चित उदयपुर के कलाकार अब्बास बाटली वाला जैसे रचनाकार रहे हैं, जिनकी कला में मोलेला की लोक व ग्रामीण संस्कृति के बिम्ब परिभाषित होते हैं। कुम्भकारों के पुराने मकान, चाक, अवाडा तथा कच्ची दीवारों के रचना सौन्दर्य को रंगांकित करने के साथ ही इन्होंने पशु–पक्षी एवं मानव मुख्याकृतियों के मानरूपों को श्रृंखलाबद्ध चित्रण किया। विषय सौन्दर्य के रूप में देखें तो इन्होंने सामान्य जन जीवन से जुड़े औचक पलों को अपने रचना संसार में मुखरित किया हैं। इन्हें 1993 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय त्रैवार्षिकी में सर्वोच्च पुरुस्कार से नवाजा गया हैं।

अहमदाबाद स्थित राष्ट्रीय डिजाईन संस्थान (एन. आई. डी.) में प्राध्यापक रहे जयंति भाई नाईक सदैव पारम्परिक तथा लोक आदिवासी कला रूपों से प्रेरित रहे हैं। अपने मृणशिल्प एवं सिरोमिक कला रूपों की देश–विदेश में प्रदर्शनियां आयोजित कर चुके प्रो. नाईक भी मोलेला के कलारूपों से प्रभावित रहे हैं। यहीं नहीं, मोलेला के कई कुम्भकारो को इन्होने डिजाईन संस्थान में आमंत्रित कर मोलेला की पारम्परिक मृणकला को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया। स्टूडियो 25 टेराकोटा के राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय मृण कला शिविरों में इनकी सक्रिय भागीदारी रही हैं।
राजस्थान के देवगढ़ में जन्में गोवर्धन सिंह पंवार ने एम. एस. विश्व विद्यालय के ललित कला संकाय में अध्ययन कर आधुनिक कला जगत में सक्रिय हुऐ। लगभग 3 दशक तक गोवा सरकार के हस्तशिल्प कला बोर्ड के निदेशक रहे। गोवर्धन पंवार ने अपने मृण व काष्ठशिल्पों की कई प्रदर्शनियाँ की। इन्हें अपने कला सृजन के लिए कई राष्ट्रीय पुरुस्कार प्राप्त हुए हैं। मिट्टी के गुण, रंग लगाने व पकाने की तकनीक में इन्होने कई प्रयोग किये। विषय रूप में देखें तो इनकी कला में नारी देह के लयबद्ध सौन्दर्य भाव के साथ–साथ मुखाकृतियों का रूप–विधान नवीनता के साथ रचा गया हैं। अपनी कलायात्रा के दौरान इन्होंने कई बार प्रवास कर कुम्भकारो से संवाद स्थापित किया और उनके तकनीकी ज्ञान को बढ़ाया। भीलवाड़ा स्थित इनकी कार्यशाला में छोटे व बडें आकार की मृण मूर्तियाँ आज भी प्रदर्शित हैं।

अहमदाबाद के युवा कलाकार अलाप शाह व रविन मिस्त्री ऐसे युवा कलाकार है, जो एक दशक से मोलेला की यात्राऐ कर पारम्परिक कला रूपों को निजि कला भाषा में रच रहे हैं। स्टूडियों 25 टेराकोटा के सौजन्य से आयोजित राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशालाओ में रचनात्मक भागीदारी कर माटी माध्यम में प्रयोगशील रहे है। इसी के साथ बनारस के अभिषेक पाण्डे, दीपक यादव के साथ ही उदयपुर के ललित शर्मा तथा नाथद्वारा के हेमंत चित्रकार ने भी अपने कला संयोजन में मोलेला के पारम्परिक रूपों व रंग विधान को आत्मसात कर कलायात्रा को नवीन आयाम दिये।

शिल्प के इस संदर्भ में कुछ ऐसे यूरोपिय कलाकारों का जिक्र करे जिन्होने कुम्भकारों के गांव मोलेला में प्रवास कर माटी में रूपाकारों को संयोजित किया। इनमें रुइन्स आईसलेण्ड निवासी सर्ज तथा मीरा कोलमेन, आयरलेण्ड की वरिष्ठ महिला कलाकार जेन जर्माईन, स्वीट्जरलेण्ड की फ्रेंक्राईज एवं जर्मनी के एलन निकोलस, स्वीडन के रेज फाल्हा, कनाड़ा की ओल्गा डोसा तथा बंगलादेश की महिला कलाकार सादिया आदि प्रमुख है। सिरेमिक कला से जुडे इन सभी विदेशी कलाकारों ने मोलेला की माटी में तो शिल्प रचनाएं की ही, न्यून तापमान पर लकड़ी से अवाड़ा पकाने की तकनीक भी सीखी। उल्लेखनीय है कि इन सभी कलाकारों ने मोलेला में रचित मृण शिल्प कलाकृतियाँ को अपने देश की कला दीर्घाओं में प्रदर्शित कर अपनी विशेष पहचान बनाई।

निष्कर्ष रूप में देखें तो मोलेला की पारम्परिक कला में लोक रूप एवं देशज् तत्व समाहित दिखाई देते है तथा इन कुम्भकारों की पारम्परिक मृणकला से प्रेरित होने वाले देश–विदेश के कलाकारों ने अपने अपने दृष्टिकोण व भाव रूपों को नई कला भाषायें रची हैं।

<u>संदर्भ</u> –

1. दमामी, ए. एल., राजस्थान की आधुनिक कला एवं कलाविद्, हिमांशु प्रकाशन, उदयपुर, पृष्ठ 18, 19, 20
2. चतुर्वेदी, डॉ. ममता, सौन्दर्य, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1997, पृष्ठ 44
3. मुखर्जी, डॉ. राधा कमल, भारत की संस्कृति और कला, दिल्ली 1958, पृष्ठ 182
4. आकृति वार्षिक अंक, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर 2013, पृष्ठ 7

5. भारद्वाज, विनोद, जनसत्ता वार्षिक अंक, नई दिल्ली, पृष्ठ 22, 33
6. कला संवाद, उतरप्रदेश अकादमी प्रकाशन, लखनऊ, 1996, अंक 63, पृष्ठ 138
7. राजस्थान पत्रिका, कला संस्कृति, जयपुर, 2003, पृष्ठ 7